रात्रि–क्लास 22–2–68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

सबसे नई बात ही है कि श्रीमत पर सतयुग की स्थापना हम बच्चे कर रहे हैं। ड्रामा के प्लेनअनुसार और कल्प पहले मुआफिक। बच्चों की बुद्धि में तो है नई दुनिया। सतयुग में एक ही आदि सनातन देवी देवता धर्म है। ब्राह्मण अच्छी रीत जानते हैं। बाप ने समझाया है नई दुनिया में नया राज्य। उनको ही सुखधाम कहा जाता। यह तो सबको खुशख़बरी सुनानी चाहिए। फिर से हम यह राज्य स्थापन कर रहे हैं। बाबा कहे थे प्रभात–फेरी निकालो। बधाईयां दो शिव बाबा परमपिता फिर से यह राज्य स्थापन कर रहे हैं। नटसेल में ही समझाना चाहिए। पवित्र देवी–देवताओं का राज्य था। अभी वह तो है नहीं। बाकी सिर्फ चित्र हैं। अभी बेहद का . .... कर गंवाया हुआ राज्य लो। तुम्हारी खुशख़बरी ही यह है। है भी सहज राजयोग। बाप से स्वर्ग का वर्सा मिलता है। शिवजयन्ति मनाते हैं। आये भी हैं पुरूषोत्तम संगम युग पर। उत्तम ते उत्तम पुरूष देवी–देवताएं ही थे। अभी रावणराज्य खत्म हो दैवीराज्य ज़िन्दाबाद होता है। यह तो अच्छा ही है। गांधी भी ऐसे कहते थे रामराज्य हो। सो अभी यह स्थापन हो रहा है। हम अंगे अखरे चित्रो से समझा रहे हैं। जो समझेंगे वही राज–भाग लेंगे। वही गीता की एपीसु(सो)ड वाली महाभारत लड़ाई है। पहले–2 सृष्टि पर पवित्र देवताओं का राज्य था। फिर पुनर्जन्म लेते आये। सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी राज्य यह तो नामी–ग्रामी है। फिर वैश्यवंशी और शूद्र वंशी बनते हैं। समझाना तो बहुत सहज है। चित्र ते(तो) सब जगह है। संदेशी को भी अभी सर्विस पर भेज देते हैं। तुम बड़े सर्जन के बच्चे हो। ऐसा कोई मनुष्य मनुष्य को निरोगी, ... एवर हैप्पी, एवर हेल्दी बना न सके। 21 जन्म लिए यह एवर हेल्दी बनते हैं। तुम बड़े जबरदस्त डाक्टर हो। बाप आकर आप समान बनाते हैं। समझाने का तो बहुत रहता है। शराफ भी हो। मटा–सटा (बदली–सदली) करते हो। पुराना कखपन देते हो। बाप कितना वेप्रचाह(बेपरवाह) दाता है। शाहुकारों ऊपर नज़र ही नहीं चढ़ती। आगे चल कर बहुत कुछ मकान आदि देंगे ,पैसे देंगे; परन्तु क्या करेंगे। तुम भी बेप्रवाह(बेपरवाह) बादशाह बनते हो। भारतवासी पहले पवित्र (प्रवृ)त्ति मार्ग में थे। सम्पूर्ण निर्विकारी थे। यथा राजा–रानी तथा प्रजा। अभी हम ब्राह्मण कीड़ों को बदल ब्राह्मण बनाते हैं। फिर ब्राह्मण से देवता बनना है। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे जरूर ब्राह्मण ही होंगे। सभी कहते हैं माता–पिता। पाईन्ट्स बहुत अच्छी–2 है। प्यार, रूची से समझाते रहेंगे तो याद में रहेंगे। ऊंच ते ऊंच भगवान है। बाकी ब्रह्मा–सरस्वती, ल0ना0 तो यहां ही है। सिर्फ सम्पूर्ण फरिश्ता बन जाते हैं। उनका भी सा0 होता है। बाकी हैं तो दोनो यहां के ना। फिरिश्ते(फरिश्ते) बन जाते हैं तो फिर सा0 होता है। यह सब बातें तुम्हारी बुद्धि में है। 84 का चक्र भी है। फिर दूसरे–2 आते हैं। ऐसे नहीं समझना चाहिए बहुत थोड़े आते हैं। यह तो बाप भी कहते हैं कोटो में कोऊ..... यहां ही डिनायस्टी स्थापन होती है। पहले ब्राह्मण कुल होता है। उनको नियरटी भी नहीं कह सकते। यह सब बातें समझने की है। ऐसे नहीं कहना चाहिए हिन्दुधर्म नहीं। समझाना है आदि सनातन पवित्र देवीदेवता प्रवृति मार्ग था। तुम्हारे पास है ही देवताओं के चित्र।प्रभातफेरी भी निकालेंगे। समाचार तो आवेंगा ना। तुम बच्चो को फ़िकरात की कोई बात ही नहीं। कितने भी विध्न पड़े। डरने की बात ही नहीं। विश्व की बादशाही लेते तो उन से थोड़े ही डरना है। लड़ाई में मरने लिए खुशी से जाते हैं। तुमको भी खुशी होनी चाहिए। शरीर विनाशी चीज़ है। हम आत्मा जाकर दूसरा शरीर लेंगे। जो ड्रामा में होगा। यह अन्दर में निश्चय होना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं दवाई आद नहीं करनी है। इतना योगबल नहीं है। नहीं तो फिर वह हठयोग हो जाता है। यह अमूल्य शरीर है। बाप से वर्सा ले रहे हैं। अगर कोई जल्दी चला जावेंगा तो कहेंगे तकदीर में इतना न था, पूरा दर्जा पा न सके। तुम्हारा माशुक एक ही हसीन है। सभी को हसीन बनाने आते हैं। कितना अच्छा मुसाफिर ठहरा। बाप भी समझते हैं यह सब बच्चे भी आशुक हैं। एक है माशुक। सभी को फिर साथ ले जाते हैं। सभी की सद्गति करते है। अन्दर में यही तात होगी नंगे आये नंगे जाना है। अच्छा मीठे–2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को नमस्ते। नमस्ते।